IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''महाविद्यालयों द्वारा करायी जाने वाली खेल गतिविधियों पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभावों का विश्ले''णात्मक अध्ययन '' (बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी, उ.प्र. के सन्दर्भ में)

'डॉ अतुल कुमार तिवारी

*सहायक प्रध्यापक, शारीरिक शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय,मेरठ

सार

भारत सरकार एवं राज्य सरकार के शासनादेश के द्वारा प्रत्येक महाविद्यालयों में क्रीड़ा गतिविधियों का संचालन अनिवार्य हैए किन्तु धन अभाव के कारण खेल.कूद क्रियाऐं सही ढंग से संचालित नही हो पाती और जिससे छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास अधर में लटकता नजर आ रहा है।

शोधार्थी ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालयए झांसी उत्तर प्रदेश के 100 महाविद्यालयों का अध्ययन किया जिसमें पाया कि लगभग 80 प्रतिशत महाविद्यालयों में खेल.कूद की गतिविधियाँ केवल धन के अभाव से प्रभावित होती है। शोधार्थी ने अपनी स्वनिर्मित प्रश्नावली का पायलेट विधि से निर्माण कर महाविद्यालयों में स्वं जाकर सर्वेक्षण किया। शोधार्थी ने अपने शोध कार्य में पाया कि महाविद्यालयों के क्रीड़ा विभाग की आय बहुत ही कम है और कहीं से अन्य स्त्रोत नही है। अंततः निष्कर्ष यह निकला कि यदि क्रीड़ा गतिविधियों के लिये पर्याप्त धन उपलब्ध होता है तो खेल.कूद क्रियाऐं सुचारू व व्यवस्थित ढंग से की जा सकती है। इन्हीं कमियों को दूर करने के लिये शोधार्थी ने अपने शोध कार्य में सुझाव प्रस्तुत किया है।

संकेत शब्दरू शारीरिक शिक्षा, उच्च शिक्षा आयोग स

प्रस्तावना – जिस प्रकार भोजन के बिना जीवन सम्भव नहीं है, ठीक उसी प्रकार 'धन' क बिना खेलकूद क्रियायें भी सम्भव नहीं है। आज प्रत्येक महाविद्यालय को उसमें पढ़ने वाले सभी छात्र–छात्राओं को खेल–कूद सिखाना अनिवार्य है, किन्तु अधिकतर महाविद्यालयों में छात्र–छात्रायें खेल के प्रति जागरूक हैं, किन्तु धन अभाव के कारण वह खेल नहीं पाते हैं।

आज भारत के प्रत्येक सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाओं में भाारीरिक गतिविधियों को पुनः जागृत करने के लिए आह्वान किया जाता है। विभिन्न कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं ताकि भाारीरिक गतिविधियों एवं खेलकूद को प्रोत्साहन मिल सके ताकि भविश्य में बच्चे और नौजवान, युवा पूर्ण स्वस्थ रहें।

हमारे दे''ा की सरकार भी खेलकूदों एवं भाारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रमों एवं योजनाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं। अनेक प्रकार के कार्यक्रम, नियम बनाये जा रहे हैं किन्तु इतना सब करने के बावजूद हम वह परिणाम नहीं पा रहे जो हमें पाना चाहिए।

समस्था कथन –भाोधार्थी बुन्देलखण्ड वि''वविद्यालय झांसी (उत्तर प्रदे''ा) के विभिन्न महाविद्यालयों में लगभग 5–6 वर्शो से भाारीरिक ि"ाक्षा विभाग में अध्यापन कार्य कर रहा है। अध्यापन के दौरान ज्ञात हुआ है कि धन अभाव के कारण खेलकूद क्रियायें सुचारू रूप से संचालित करने में असुविधा का सामना करना पड़ता है, इसका प्रभाव सीधे तौर पर विद्यार्थियों व उसके पाठ्यक्रम की गुणवत्ता पर पड़ता है। भाोधार्थी ने अपने अध्यापन कार्य के समय ऐसा महसूस किया और जब भाोधार्थी को भाारीरिक ि"ाक्षा में भाोध कार्य करने का मौका मिला तो इसे महत्वपूर्ण विशय को ही भाोध का विशय चुना।

'ोध की परिभा"ा–भोध भाब्द एक प्रकार की भुद्धि, संस्कार या संसोधन का अर्थ होता है। इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि प्रदत्तों के वि"लेशण, सारणीयन और कुछ स्पश्टीकरण के लिए भोध भाब्द का प्रयोग कर सकते हैं।

भोध भाब्द का प्रयोग किसी संसोधन या वस्तु की खोज के लिए नहीं किया जाता है बल्कि यह उस क्रिया–प्रक्रिया का घोतक है जिसमें अनेक प्रकार के तथ्यों का एकत्रीकरण और अनेक आधारों पर व्यापक निश्कर्श निकालना सम्मिलित है। इस भाब्द में प्रकृति के अनुसार पूछतांछ, जाँच, गहन निरीक्षण, व्यापक परीक्षण, योजनाबद्ध अध्ययन, सोद्दे"य एवं तत्परतायुक्त सामान्य निर्धारण आदि की प्रक्रियायें महत्वपूर्ण है। *'राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय*

पी.एम. कुक के अनुसार '' किसी समस्या के सन्दर्भ में ईमानदारी, विस्तार तथा बुद्धिमानी से तथ्यों, उनके अर्थ एवं उपयोगिता की खोज करना ही अनुसंधान है। ''

डब्लयू.एम.मनरो के अनुसार'' अनुसन्धान उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है जिसका पूर्ण तथा अपूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूंढना है। अनुसन्धान के लिए तत्व लोगों के मतों के कथन, ऐतिहासिक तथ्य, लेख, अभिलेख, परखों से प्राप्त फल, प्र"नावली के उत्तर अथवा प्रयोगों से प्राप्त सामग्री हो सकती है ''।

'ोध की आवश्यकता–भोधार्थी ने अपने अध्ययन, अध्यापन एवं भोध कार्य के सर्वेक्षण के समय पाया कि लगभग प्रत्येक महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों को सबसे ज्यादा धन प्रभावित करता है। धन के अभाव में खिलाड़ियों को अच्छे उपकरण उपलब्ध नहीं हो पाते और सही वे"ाभूशा नहीं मिल पाती और साथ ही साथ खिलाड़ियों को उचित पौश्टिक आहार भी नहीं मिल पाता जिससे वह अपना उच्च प्रद"र्न करने में असफल रहता है।

भोधार्थी ने अपने भोध कार्य में आंकड़ों के संकलन के समय पाया कि ज्यादातर महाविद्यालयों में खेलकूद विभाग में आय के स्त्रोत न होने पर अच्छा प्र"िक्षक उपलब्ध नहीं हो पाता और खेलकूद मैदानों का सही रखरखाव भी नहीं हो पाता है। इन सभी कारणों से खेलकूद क्रियायें प्रभावित होती हैं।

'ोध का महत्व–भोधार्थी ने अपने भोध के महत्व को निम्न प्रकार वर्णित किया है –

1– व्यवधानों का आंकलन करना।

2– आंकलन भौली का निर्माण करना।

3– क्रीड़ा गतिविधियों पर पड़ने वाले व्यवहारों को सूची तैयार करना।

4– व्यवधानों का समाधान।

5– व्यवधानों का वि"लेशण कर सुझाव प्रस्तुत करना।

'ोध का उद्देश्य–भोधार्थी के अनुसंधान का उद्दे"य निम्नवत है–

1–बुन्देलखण्ड वि"वविद्यालय झांसी के विभिन्न महाविद्यालयों में क्रोड़ा गतिविधियों पर पड़ने वाले आर्थिक व्यवधानों के प्रत्यक्ष व्यवधानों का पता लगाना।

2–बुन्देलखण्ड वि"वविद्यालय झांसी के विभिन्न महाविद्यालयों में क्रोड़ा गतिविधियों पर पड़ने वाले अप्रत्यक्ष आर्थिक व्यवधानों का पता लगाना।

3–प्रत्यक्ष व्यवधानों का दूढंकर उनके निराकरण हेतु सुझाव देना।

4–अप्रत्यक्ष व्यवधानों को ढूढंकर उनके निराकरण हेतु सुझाव देना।

प्रस्तुत 'ोध पत्र की परिकल्पना –

भोधार्थी के अनुसंधान का उद्दे"य निम्नवत है–

1–यदि क्रीड़ा से सम्बन्धित महाविद्यालयों में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार आर्थिक अनुदान उपलब्ध नहीं है तो भाारीरिक "िक्षा एवं खेलकूदों का स्तर अत्यन्त निम्न होगा।

2–यदि मानक के अनुरूप धन उपलब्ध है तो निम्न स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती है–

अ–कुछ छात्रों पर खेलकूद की सुविधाओं का परिणाम सकारात्मक रहेगा।

ब–बहुत से छात्रों पर खेलकूद की सामग्री और सुविधायें वांछित परिणाम नहीं दे सकते क्योंकि सम्भवतः उनकी मानसिक स्थिति या तैयारी ठीक नहीं होती।

स–उपलब्ध धन का उपयोग खेलकूदों में न करके अन्य कार्यक्रमों में प्रयोग किया जा सकता है।

'ोध की कठिनाइयां– प्रस्तुत अध्ययन में भोधार्थी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो निम्नलिखित है–

1–पूरे वि"वविद्यालय का विस्तार अधिक होने पर जो दूर के महाविद्यालय थे वहां जाने और प्र"नावली को भरवाने में असुविधा हुई।

2–प्र"नावली का वित्तीय भाग होने पर धनरा"ि व्यय से सम्बन्धित प्र"न पूछे जाने पर उपलब्ध "िक्षकों ने जानकारी न होने की अनभिज्ञता जाहिर की। जिससे बड़ी मु"्किल से प्र"नों का उत्तर मिला।

3–आकड़ों के एकत्रीकरण में सबसे बड़ी कठिनाई यह हुई कि अध्यापक प्र"नावली को देखकर प्रथम दृश्टया भासंकित हो गये क्योंकि महाविद्यालय से सम्बन्धित जानकारी सही रूप से देना, यदि संख्या में उपलब्ध सुविधायें मानक के अनुरूप नहीं हैं तो गलत हो सकता है, के डर से ऐसा हुआ। किन्तु भोधार्थी के समझाने व वि"वास दिलाने पर लोग माने।

सीमांकन – यह अनुसंधान बुन्देलखण्ड वि"वविद्यालय झांसी (उ0प्र0) से सम्बद्ध राजकीय अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोशित तथा स्नातक एवं परास्नातक और पुरूश, महिला एवं सह "िक्षा पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभावों तक सीमांकित किया गया है।

परिसीमांकन –इस अनुसंधान में बुन्देलखण्ड वि''वविद्यालय झांसी उ.प्र. के सम्बद्ध महाविद्यालयों में से कुल 100 महाविद्यालयों तक परिसीमित रहेगा। जिनका चयन यादृक्षिक न्यायद''र्ा (त्ंदकवउ ेंउचसपदह) द्वारा किया गया है।

परिभा''िक 'ाब्दावली –

1–यू.जी.सी.– यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमी''ान, वि''वविद्यालय अनुदान आयोग।

2–भाा.f''ा. – भारीरिक f''ाक्षा

3–उ.f''ा.आ.– उच्च f''ाक्षा आयोग।

पूर्व अध्ययन की समीक्षा –

प्रस्तुत भाोध पत्र में पूर्व में किए गए आर्थिक व्यवधानों से सम्बन्धित की समीक्षा निम्नवत है–

पुरूशोत्तम दे''ामुख, नागपुर वि''वविद्यालय नागपुर (1979) में अपने भाोध प्रबन्ध में '''ाा.f''ा.वि.' की आर्थिक स्थित का वि''लेशण करने का प्रयास किया है। उनका भाोध का उद्दे''य आर्थिक स्त्रोत क्या है, उनका प्रयोग किस प्रकार किया जाये और वि''वविद्यालय की आर्थिक कैसी है।

टी. मैथीन, केरला वि.वि.ने अपने भाोध प्रबन्ध में व्याख्या की है कि उनके भाोध का मुख्य ध्येय आर्थिक स्थिति के समाधान के लिए प्राप्त धनरा''ायों के स्त्रोतों का पता लगाना था। प्राप्त धनरा''ा संतोशजनक है कि नहीं और वि''वविद्यालय से प्राप्त धनसे खेलकूद कार्यक्रम चलाने में कठिनाइयां हो रही है या नहीं।

'ाोध विधि का वर्णन–

सामान्य प्रति''ाातांक विधि का सांख्यिकी उपयोग करते हुए सारणी एवं दण्ड रेखांकन द्वारा आंकड़ों को वर्गीकृत करते हुए उनकी व्याख्या के प''चात वि''लेशण के माध्यम से सम्बन्धित समस्या के निश्कर्शो तक पहुंचा गया है और सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं। महाविद्यालय द्वारा आंकड़ों के संकलन के लिए यादृच्छिक न्यायद''र्ा का प्रयोग करते हुए 100 महाविद्यालयों का चुना गया है।

स्वनिर्मित प्र''नावली को अतर्रा भाहर के महाविद्यालयों एवं विषय वि''ोशज्ञों के द्वारा पायलट विधि द्वारा तैयार किया गया है।

आंकड़ो का सारणीयन–महाविद्यालय में क्रीड़ा भाुल्क की धनरा''ा किसी अन्य मद पर व्यय की जाती है।

महाविद्यालयों की संख्या	हाँ	नहीं	अनि''चता
100	छप्स्	90	10

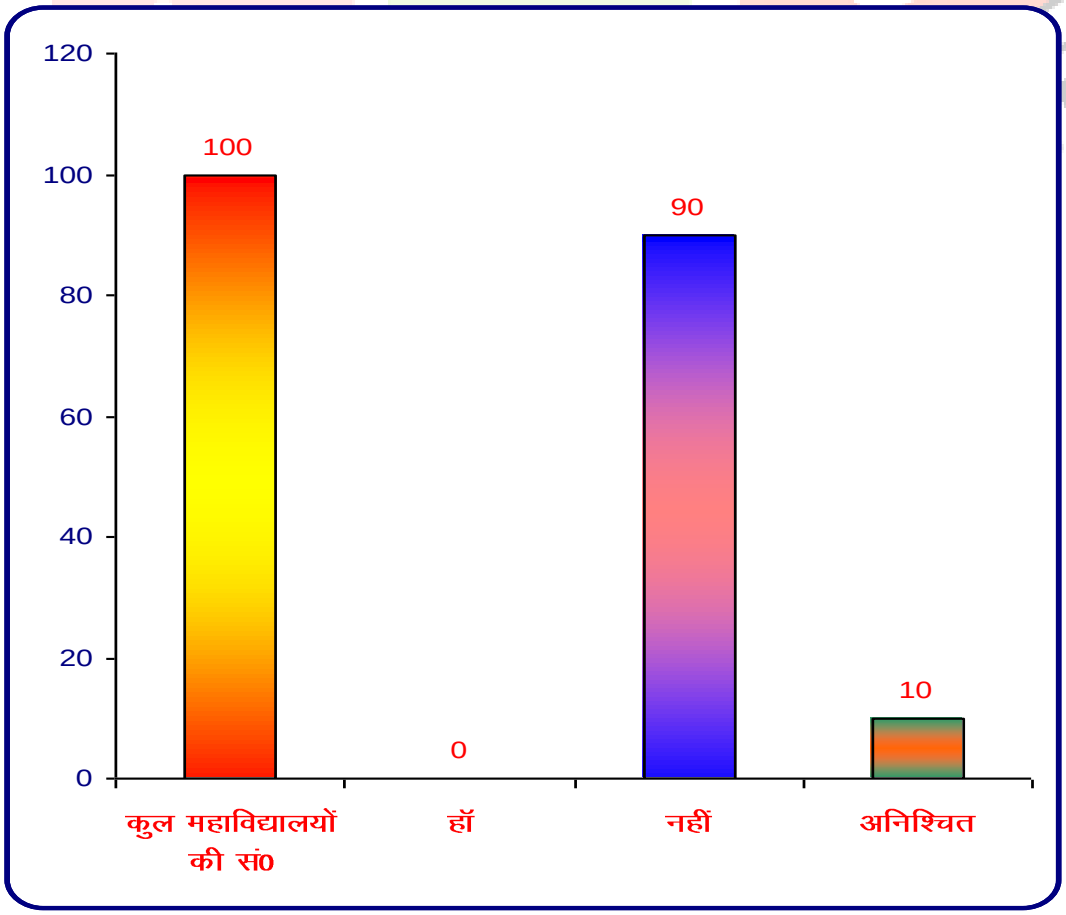

विश्ले"ाण –भाोधार्थी ने जिन 100 महाविद्यालयों का अध्ययन किया है उनमें 90 महाविद्यालय क्रीड़ा भाुल्क की धनराि"ा अन्य मदों में खर्च नहीं करते जबकि 10 महाविद्यालयों ने जानकारी न होने की अनभिज्ञता जताई।

प्रश्न –खेलकूद गतिविधियों के लिए पर्याप्त धन की अनुउपलब्धता –

महाविद्यालयों की संख्या	हाँ	नहीं	अनि"चता
100	60	40	छप्स्

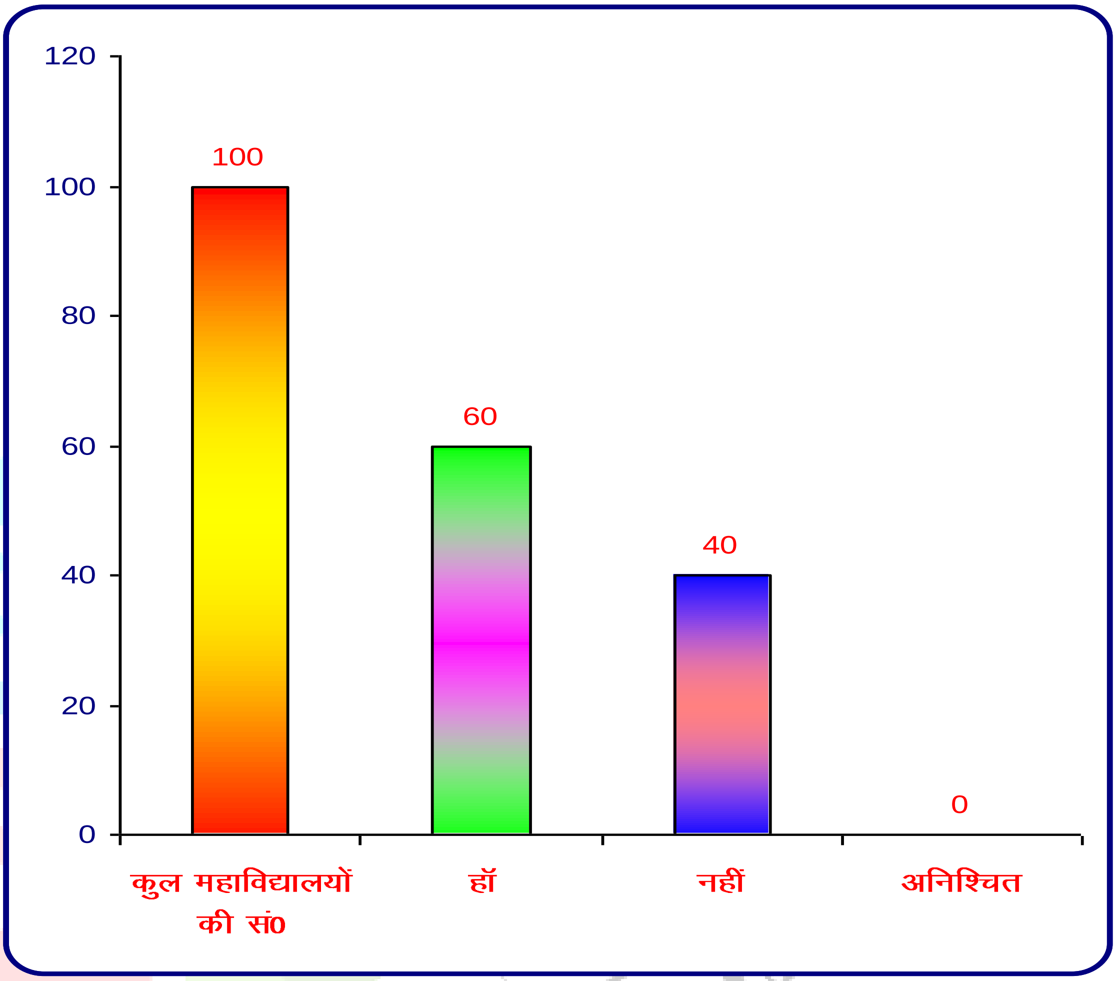

विश्ले"ाण –भाोधार्थी ने जिन 100 महाविद्यालयों का अध्ययन किया है उनमें से 60 महाविद्यालय ने खेलकूद गतिविधियों के लिए पर्याप्त धन की अनुउपलब्धता जतायी जबकि 40 महाविद्यालयों में धन उपलब्ध रहता है।

परिणाम –भाोधार्थी ने अपने आंकड़ों के संकलन में पाया कि खेलकूद गतिविधियों के लिए पर्याप्त धनराि"ा उपलब्ध नहीं है जिससे खेलकूद गतिविधियां प्रभावित होती है और आय के स्त्रोत भी बहुत कम है।

निष्क"र्ा–भाोधार्थी अपने भाोध कार्य से प्राप्त आंकड़ो, सारणीयन व वि"लेशण के आधार पर इस निश्कर्श पर पहुुंचा है कि महाविद्यालयों में आय के स्त्रोत बहुत कम है और जो धनराि"ा प्राप्त होती है उससे खेलकूद क्रियाओं को सुचारू रूप से संचालित नहीं किया जा सकता है, जिससे खेलों का स्तर गिरता जा रहा है।

सुझाव –भाोधार्थी ने अपने भाोध कार्य के लिए प्राप्त आंकड़ों, सारणीयन, वि"लेशण, परिणाम और निश्कर्श के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत किए है–

1.क्रीड़ा विभाग की आय को अन्य स्त्रोतों से बढ़ाया जाये। जैसे अनुदान, समाजसेवी संस्थाओं से सहयोग आदि।
2–उपलब्ध धन का सही व सदुपयोग किया जाये।
3–महाविद्यालय में भाारीरिक ि"ाक्षा ि"ाक्षक को अनिवार्य रूप से होना चाहिए।
4–समय–समय पर भाासन को भी आने वाली समस्याओं से अवगत कराना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1–राय, पारसनाथ ''अनुसन्धान परिचय'' आगरा चावला एण्ड सन्स, 1997–98

2–कश्णन, राधा, भाोध प्रबन्धः डिग्री कालेज आफ फिजिकल एजूके''ान, अमरावती।

3–पवार प्रतिभा– लघु भाोध प्रबन्ध, बैतूल नगर पालिका निगम क्षेत्र में स्थिति महाविद्यालयों में उपलब्ध क्रीड़ा सुविधाओं का अध्ययन, अवधे''ा प्रताप सिंह वि''वविद्यालय रीवा, म.प्र.।

4–भार्मा राहुल द्वारा ''परिवार की आर्थिक स्थितियों का खिलाड़ियों के संतुलित आहार पर पड़ता प्रभाव– 'एक तुलनात्मक अध्ययन' रीवा नगर निगम क्षेत्र, विशय में लघु भाोध प्रबन्ध, अवधे''ा प्रताप सिंह वि''वविद्यालय रीवा, म.प्र. 2006।

5–द्विवेदी अजय कुमार द्वारा ''वि''वविद्यालय स्तर के भारीर सौश्ठव खिलाड़ियों के परिवार की आर्थिक स्थिति का अध्ययन'' विशय में लघु भाोध प्रबन्ध, अवधे''ा प्रताप सिंह वि''वविद्यालय रीवा, म.प्र. 2008।